चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	10-01-23	2	1-4

भास्कर खास • एचएयू के वैज्ञानिकों ने तैयार किए बाजरा बेसन सेव, बाजरा केक, मल्टीग्रेन सेव के प्रोडेक्ट

कई साल की रिसर्च के बाद तैयार किए मोटे अनाज के प्रोडेक्ट, कई प्रोडेक्ट पर चल रही संस्थान में रिसर्च

सिटी रिपोर्टर • साल 2023 को मोटे अनाज का साल बनाया जा रहा है। पीएम नरेंद्र मोदी ने भी मोटे अनाज को हाल ही में बढ़ावा देने का आह्वान किया था। एचएयू के वैज्ञानिक प्रदेश के किसानों और कृषि विशेषज्ञों को मोटे अनाज को बढ़ावा देने के लिए जागरूक कर रहे हैं। वहीं, कई साल की रिसर्च के बाद मोटे अनाज के माध्यम से कई प्रोडक्ट तैयार किए हैं जो लोगों के लिए लाभदायक होंगे। लोगों को पौष्टिकता देने के साथ मोटापा घटाने में अहम भूमिका निभाएंगे। एचएयू के गृह विज्ञान कॉलेज के वैज्ञानिकों ने बाजरा बेसन सेव, मल्टीग्रेन सेव, बाजरा सेव, बाजरा केक आदि तैयार किए हैं। एचएयू के वीसी प्रोफेसर बीआर काम्बोज का कहना है कि कई प्रोडेक्ट विधि ने तैयार किए हैं, कई पर काम चल रहा है। आइए जानते हैं मोटे अनाज के माध्यम से तैयार किए खाद्य पदार्थों की खासियत ...

एचएयू की वैज्ञानिक डॉ. उर्वशी नांदल के मुताबिक

• **बाजरा बेसन सेव:** बाजरा और चने से ही तैयार किया जाता है। इसमें भरपूर मात्रा में डाएट्री फाइबर होते हैं जो पाचन में लाभकारी होते हैं। कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम करने और मोटापा घटाने में सहायक है।

• **मल्टीग्रेन सेव:** कई अनाज को मिक्स कर बनाई सेव को मल्टीग्रेन सेव कहते हैं। इसमें कई प्रकार का आटा होने से पौष्टिकता बढ़ जाती है।

• **बाजरा केक:** यह बाजरा से बनाया जाता है। यह मैदा के उत्पाद की जगह ले सकता है। यह पौष्टिक तत्वों से पूरी तरह से भरपूर होता है। बच्चे भी इसे खुश होकर खाते हैं। मोटापा बढ़ने की संभावना नहीं रहती है।

• **बाजरा सेव...** ज्वार और बाजरा से बनाई गई सेव हर उम्र के व्यक्ति इसे खा सकते हैं और मोटे अनाज में पाए जाने वाले पौष्टिक तत्व ग्रहण कर सकते हैं।

मोठ-बाजरा बिस्किट: यह बिस्किट दाल और अनाज के मिश्रण से बनाए गए हैं।

" विवि के वैज्ञानिक न केवल उन्नत व अधिक पैदावार देने वाली किस्में विकसित कर रहे हैं बल्कि लोगों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए मोटे अनाज के उत्पाद बनाने व उनके प्रचार-प्रसार पर भी जोर दे रहे हैं। बेरोजगार युवाओं खास तौर पर युवतियों को बाजरे सहित अन्य मोटे अनाज के उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।"

– प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, एचएयू।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	9-01-23	2	7-8

कृषि विशेषज्ञ की सलाह

डॉ. ओपी बिस्नोई, गेहूं विशेषज्ञ, एचएयू

गेहूं-सरसों की करें हल्की सिंचाई पीला रतुआ की निगरानी जरूरी

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। उत्तर पश्चिम भारत (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, हिमांचल, पश्चिमी यूपी) में गेहूं की अच्छी पैदावार के लिए कम तापमान की जरूरत होती है। इस वक्त तापमान में कमी के साथ-साथ भी नमी पर्याप्त है। इससे गेहूं के फसल की पैदावार अच्छी होगी। परंतु किसानों को पीला रतुआ रोग को लेकर सतर्क रहना होगा। पहाड़ों पर बर्फबारी से होने वाली ठंड के साथ की पीली रतुआ रोग भी बढ़ता है। इसलिए किसान हर दिन खेत का निरीक्षण करें।

इस रोग के लगने पर गेहूं की पत्ती पर हल्दी जैसा पीला पाउडर दिखता है जिसे हाथ से छूकर परखा जा सकता है। रोग की पहचान होने पर प्रोपाकोनाजोल(टिल्ट) 0.1 प्रतिशत का 200 एमएल 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें। इसके अलावा रोग ग्राही किस्म एचडी 2851, एचडी 2967, डब्ल्यूएच 711 व पीबीडब्ल्यू 343 की विशेष देखभाल की जरूरत है। बीमारी दिखने पर दवा का छिड़काव करें। इस वक्त खेत में जरूरत के अनुसार हल्की सिंचाई भी कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	10-01-23	2	3-6

जलवायु परिवर्तन विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 17 फरवरी को

माई सिटी रिपोर्टर

एचएयू में होने वाले सम्मेलन में शोध पत्र पढ़े जाएंगे, 27 जनवरी तक होगा पंजीकरण

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में 17 से 19 फरवरी तक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन होगा। सम्मेलन में देश व दुनिया भर से करीब 500 विशेषज्ञ हिस्सा लेंगे। खाद्य सुरक्षा और स्थिरता के लिए जलवायु अनुकूल कृषि विषय पर आयोजित सम्मेलन के दौरान शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे।

विश्वविद्यालय के मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्या ने बताया कि एक मंच पर कृषि वैज्ञानिकों, कॉर्पोरेट सीईओ, उद्योगपतियों व अन्य प्रमुख हित धारकों के जुटने से ज्ञान व अनुभव साझा करने का अवसर मिलेगा। सम्मेलन में अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, स्वीडन, कनाडा, डेनमार्क, ऑस्ट्रेलिया, जापान और बेल्जियम के कृषि विशेषज्ञ कृषि इंजीनियरिंग और भविष्यवादी दृष्टिकोण पर विचार साझा करेंगे। कुलपति डॉ. बीआर कांबोज की देखरेख में आयोजित सम्मेलन में शामिल होने के लिए प्रतिभागियों को 27 जनवरी तक अपना पंजीकरण कराना होगा।

स्थानीय छात्रों को होगा विशेष फायदा

सम्मेलन में देश व दुनिया के कृषि विशेषज्ञ व कृषि उद्यमी भी शामिल होंगे, जिसका लाभ विश्वविद्यालय व इससे जुड़े कॉलेज के छात्रों को मिलेगा। शोध छात्रों को अपने शोध कार्य के लिए नए विकल्प भी मिल सकेंगे। आयोजन का असल उद्देश्य यह है कि यहां हुई चर्चा के आधार पर कृषि क्षेत्र में भविष्य में आने वाली समस्याओं की पहचान कर उसके अनुरूप नए समाधान तैयार किए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	9-01-23	2	1-6

सरसों की नई प्रजाति आरएच 1706 की इस साल सितंबर से होगी बिजाई

प्रति एकड़ औसतन 11 क्विंटल पैदावार है इस प्रजाति के सरसों का

इरूसिक अम्ल 2 प्रतिशत से भी कम होने के कारण हृदय रोगियों के लिए फायदेमंद

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने सरसों की नई प्रजाति आरएच 1706 विकसित की है, जिसमें इरूसिक अम्ल की मात्रा 2 प्रतिशत से भी कम है, जबकि अन्य प्रजातियों में यह 40 प्रतिशत से अधिक होती है। यह नई किस्म अब बिजाई के लिए भी उपलब्ध होगी। इस साल सितंबर में इसकी बिजाई शुरू होगी। इसकी पैदावार करीब 11 क्विंटल प्रति एकड़ है।

पूरे उत्तर भारत में भोजन पकाने में सरसों के तेल का प्रयोग सर्वाधिक होता है। हरियाणा सरसों के प्रमुख उत्पादक प्रदेशों में से एक है। सरसों की जिन किस्मों की अभी बिजाई हो रही है, उनमें 40 प्रतिशत इरूसिक अम्ल होता है। चिकित्सकों का मानना है कि इरूसिक अम्ल की अधिक मात्रा हृदय रोगियों के लिए नुकसानदायक है। इसीलिए अब

खेत में उगी सरसों की फसल। संवाद

मूंगफली आदि के तेल में भी भोजन पकाने लगे हैं।

एचएयू के वैज्ञानिकों ने अब सरसों की ऐसी नई किस्म खोजी है, जिसमें इरूसिक अम्ल की मात्रा दो प्रतिशत से भी कम है। विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग के अनुवांशिकी व पौध प्रजनन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. रामअवतार, आरके श्योराण, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र राकेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोयल, दिलीप कुमार, श्वेता, महावीर व राजवीर सिंह की टीम इस रिसर्च कार्य में सहयोगी थी।

डेढ़ गुना बढ़ेगा उत्पादन

आमतौर पर सरसों की प्रति एकड़ उपज सात से आठ क्विंटल ही होती है, लेकिन नई प्रजाति आरएच 1706 की औसत उपज 10.5 क्विंटल प्रति एकड़ से 11.5 क्विंटल प्रति एकड़ तक है। इस तरह डेढ़ गुना अधिक उपज के चलते किसानों को सीधे फायदा देगी। इसके अलावा हृदय रोगियों के लिए अच्छी होने के चलते इस सरसों के तेल की डिमांड भी अधिक होगी। इसलिए इसकी मांग मार्केट में पुराने प्रजातियों से अधिक रहने की संभावना है।

अगेती प्रजाति है, 142 दिन में होगी तैयार

आरएच 1760 राया (सरसों) की अगेती प्रजाति है, जिसकी बिजाई 30 सितंबर से 20 अक्तूबर के बीच होगी। यह 136 से 142 दिन में तैयार होती है। बिजाई के लिए 1.25 किलोग्राम से 2 किलोग्राम प्रति एकड़ तक की जरूरत होती है। कतार से कतार की दूरी 30 सेंटीमीटर व पौधे से पौधे के बीज की दूरी 10-15 सेंटीमीटर होगी। सरसों की दो बार सिंचाई करनी होगी। एक बार फूल निकलते समय व दूसरी बार फली लगते समय।

> इरूसिक अम्ल की अधिकता हृदय के लिए अच्छी नहीं मानी जाती है। इसलिए विश्व विद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की ऐसी किस्म विकसित की, जिसमें इस अम्ल की मात्रा काफी कम है। उच्च स्तरीय परीक्षण से गुजरने के बाद इसे बिजाई के लिए जारी किया गया है। इस माह सितंबर में किसान इसकी बिजाई कर सकेंगे। इस प्रजाति की उपज भी अधिक है।
>
> डॉ. संदीप आर्या, मीडिया एडवाइजर, एचएयू